REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 8 | MAY - 2018

''केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का सतत एवं व्यापक मूल्यांकनका उनके सामाजिक विकास पर प्रभाव।''

श्रीमती पूनम मिश्रा
एच.ओ.डी., टेवाईट बी.एड. ट्रेनिंग कॉलेज कटनी.

प्रस्तुत शोध पत्र में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन से उनका कितना सामाजिक विकास प्रभावित होता है, देखा गया। अध्ययन हेतु प्रतिदर्श के रूप में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल के विद्यालय से नवमीं, दसवीं के 300–300 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया। इनके परिणामों से यह ज्ञात होता है कि सामाजिक विकास पर सतत व्यापक मूल्यांकन का प्रभाव पड़ता है अतः विद्यालयों में सामाजिक विकास के लिए क्रिया–कलापों का क्रियान्वयन किया जाना चाहिए।

प्रस्तावनाः–

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो बालक के विकास की नींव है शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास किया जाता है यह विकास प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से समाज एवं राष्ट्र का विकास करता है। समय–समय पर शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति का आकलन करने के लिए मूल्यांकन का उपयोग किया जाता है, मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक के विकास एवं पाठ्यक्रम के शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति का आकलन किया जाता है। मूल्यांकन ही वह साधन है जिसके द्वारा बालक में होने वाले ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक परिवर्तनों का आकलन किया जाता है। अतः मूल्यांकन की प्रक्रिया शिक्षा जगत में वैदिक काल से आधुनिक काल तक व्याप्त है। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल ने सतत् और व्यापक मूल्यांकन द्वारा विद्यार्थी के न केवल शारीरिक विकास पर जोर दिया बल्कि इसके द्वारा विद्यार्थी में सामाजिक विकास, मानसिक विकास, संज्ञानात्मक विकास तथा चारित्रिक विकास को भी परिलक्षित किया।

बालक के विकास में बौद्धिक विकास आवश्यक है संज्ञानात्मक अनुभवों के अभाव में बालक के वातावरण में समायोजन की क्षमता का विकास नहीं होता है। तो वह अपने आस–पास के लोगों के साथ समायोजित करने और उनके साथ मिलजुलकर रहने में असमर्थ रहता है। विद्यार्थी का सतत और व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया के अंतर्गत सामाजिक विकास आवश्यक है। इसके अंतर्गत विद्यार्थी विद्यालय में विभिन्न कौशलों को सीखता है जैसे सम्प्रेषण कौशल, अन्तरवैयक्तिक कौशल एवं परानुभूति कौशल ये विद्यार्थी के भावों से जुड़े रहते है अर्थात् विद्यार्थी में भावात्मक कौशल का भी विकास होता है जो सामाजीकरण के अंतर्गत आता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास के लिए शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक क्रियाओं में विद्यार्थियों की सहभागिता न केवल निश्चित वरन अनिवार्य है। इस बात को मद्दे नजर रखते हुए केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल ने सन 2009 में सतत व्यापक मूल्यांकन को अनिवार्य कर दिया। इस क्षेत्र में पूर्व में किये गये शोधों में मिश्रा अमरजीत (2005) ने पाया कि केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय शिक्षा मण्डल द्वारा अपनाई गई ग्रेडिंग प्रणाली एवं सतत व्यापक मूल्यांकन का विद्यार्थियों के समग्र विकास पर जिसके अंतर्गत सामाजिक विकास भी आता है सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, इसी प्रकार जादल, एम.एम. (2011) ने पाया कि प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर सतत और व्यापक मूल्यांकन के उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः इस क्षेत्र में गहन अध्ययन कर शोधकर्ता ने व्यक्तित्व के विकास के सामाजिक विकास पर शोध करने का निर्णय लिया।

शोध निष्कर्षों से यह भी ज्ञात हो सकेगा कि क्या केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल तथा मध्य प्रदेश शिक्षा मण्डल के विद्यार्थियों के सामाजिक विकास में कोई अंतर है। यदि ऐसा है तो तुलनात्मक दृष्टिकोण से जो भी अच्छा होगा उसके माध्यम से विद्यार्थियों के सामाजिक विकास हेतु प्रयत्न किये जा सकेगे।

उद्देश्य –

1. माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं एवं विद्यार्थियों का सतत एवं व्यापक मूल्यांकन से उनके सामाजिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन

परिकल्पनाएँ–

1. माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं एवं विद्यार्थियों को सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति से मूल्यांकन का उनके सामाजिक विकास पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

न्यादर्श–

शोध अध्ययन में परीक्षण हेतु केन्द्रीय विद्यालय से 600 छात्र–छात्राऐं और मध्य प्रदेश शिक्षा बोर्ड से 600 छात्र–छात्राओं को लिया गया।

उपकरण–

प्रस्तुत शोध कार्य में सामाजिक विकास मापने के लिए स्वनिर्मित परीक्षण का प्रयोग किया गया।

शोध विधि– प्रस्तुत शोध कार्य में आँकड़ों के एकत्रीकरण के लिए जबलपुर जिले के केन्द्रीय विद्यालय से 600 विद्यार्थी और मध्य प्रदेश शिक्षा बोर्ड से 600 विद्यार्थियों को यादृच्दिक विधि से चुना गया इसके पश्चात विद्यार्थियों से सामाजिक विकास मापनी भरवाई गई तथा फलांकन किया गया। इन परीक्षणों के पश्चात परिणामों की व्याख्या और विश्लेषण कर शोध निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या– प्रस्तुत शोध कार्य में आँकड़ों के आधार पर परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्नानुसार है।

सामाजिक विकास संबंधी परिणाम–

तालिका क्रमांक–01

विद्यार्थियों के सामाजिक विकास पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल	600	50.81	7.77	6.58	<0.01
मध्यप्रदेश शिक्षा बोर्ड	600	53.39	5.65		

स्वतंत्रता के अंश – 1198

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 1.96

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 2.59

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणाम से स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल का मध्यमान 50.81 है। मध्यप्रदेश शिक्षा बोर्ड का मध्यमान 53.39 है। मध्यमानों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है।

अतः केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल` विद्यार्थियों के सामाजिक विकास में सार्थक अंतर है।

तालिका क्रमांक–02

छात्रों के सामाजिक विकास पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल	300	51.33	7.63	3.10	<0.01
मध्यप्रदेश शिक्षा बोर्ड	300	53.03	5.47		

स्वतंत्रता के अंश – 598

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 1.96

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 2.59

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणाम से स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल का मध्यमान 51. 33 है। मध्यप्रदेश शिक्षा बोर्ड का मध्यमान 53.03 है मध्यमानों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है।

अतः केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल के विद्यार्थियों के सामाजिक विकास में सार्थक अंतर है।

तालिका क्रमांक–03

छात्राओं के सामाजिक विकास पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल	300	52.28	7.89	6.15	<0.01
मध्यप्रदेश शिक्षा बोर्ड	300	53.76	5.80		

स्वतंत्रता के अंश – 598

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 1.96

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 2.59

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणाम से स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल का मध्यमान 50. 28 है। मध्यप्रदेश शिक्षा बोर्ड का मध्यमान 53.76 है। मध्यमानों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है।

अतः केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मडल के विद्यार्थियों के सामाजिक विकास में सार्थक अंतर है।

व्याख्या–

उपरोक्त परिणामों से यह तथ्य उभरकर सामने आया है कि विद्यार्थी शिक्षा के जिस स्तर पर अध्ययन कर रहा है वहाँ सहशैक्षिक क्रियाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। पाठ्यक्रम के साथ अन्य क्रिया–कलापों का विद्यार्थी के जीवन में महत्व है। अतः विद्यार्थी के सामाजिक विकास पर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का प्रभाव पड़ता है। बालक का जैसे–जैसे विकास होता है वह अपने वातावरण के साथ समायोजन करना सीख जाता है और इसमें विद्यालय के शैक्षिक ओर सहशैक्षिक कार्यक्रम सहायक होते है। विद्यार्थी जब विद्यालय के क्रियाकलापों में भागीदार होता है तो उस समय वह समूह में कार्य करता है या अपने सहपाठियों के साथ मिलकर कार्य को पूर्ण करता है इससे उसमें सामाजिक विकास की भावना का विकास होता है। द्विवेदी प्रकाश (2005) ने अपने अध्ययन में पाया कि केन्द्रीय विद्यालय एवं अन्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के पाठय सहगामी क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनकी शैक्षणिक क्रियाओं पर अध्ययन किया और कि यह निष्कर्ष पाया कि पाठय सहगामी क्रियाओं से विद्यार्थीकी शैक्षिक क्रियाओं में रूचि का विकास होता है। इसी प्रकार थामस, शरम्भा (2009) ने भारत वर्ष में सी.बी. एस. ई. में सतत व्यापक मूल्यांकन पद्धति का नये शिक्षा पद्धति के रूप में अध्ययन किया जिसमें शैक्षिक और सहशैक्षिक गतिविधियों के क्रियान्वयन पर जोर दिया गया जिसमें जीवन कौशल, अभिवृत्तियाँ, सृजनात्मक चिंतन, आलोचनात्मक चिंतन, सामाजिक कौशल एवं संवेगात्मक कौशल पर जोर दिया गया। और निष्कर्ष रूप में पाया कि यदि सतत व्यापक मूल्यांकन विधि का उपयोग किया जाए तो विद्यार्थी मं इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा अतः यह देखा गया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक

उपलब्धि में सामाजिक विकास आवश्यक है। अतः विद्यालयों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का प्रभावकारी तरीके से लागू किया जाना आवश्यक है।

निष्कर्ष–

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल के छात्र–छात्राओं एवं विद्यार्थियों के सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का उनके सामाजिक विकास पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ–

- ❖ अस्थाना, विपिन (2009) मनोविज्ञान शिक्षा में मापन एंव मूल्यांकन, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 16 वां संस्करण, पृ. 243–493
- ❖ अग्रवाल, जे.सी. (2015) शैक्षिक प्रौद्योगिकी तथा प्रबंधन के मूल तत्व, आगरा, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, संस्करण –4th, पृ. 353–354
- ❖ गैरेट, ई हेनरी (2007) शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी का प्रयोग, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना, 11वां संस्करण, पृ. 73
- ❖ Hurlock, B. Elizabeth (1997) Child Development, New Delhi, Tata MC Craw Hill Education Private Limited, Sixth Edition
- ❖ मंगल, एस.के. (2014) शिक्षा मनोविज्ञान, दिल्ली, पी. एच. आई. अधिगम प्राइवेट लिमिटेड, पृ. 103
- ❖ मंगल एस.के. मंगल शुभ्रा (2006) शैक्षिक तकनीकी के मूल तत्व एवं प्रबंधन, मेरठ, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस।
- ❖ मित्तल संतोष, मित्तल दीपशिखा (2002) बाल विकास तथा पारिवारिक संबंध, जयपुर, युनिवसिटी बुक हाउस प्राइवेट लिमिटेड,संस्करण 2002, पृ. 150–154
- ❖ राय, पारसनाथ, राय, सी.नी. (2011) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन
- ❖ शर्मा, ओ. पी. सिंह, रामपाल (2008) शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, संस्करण–5, (2012–13), पृ. 92–94
- ❖ वर्मा, प्रीति, श्रीवास्तव, डी. एन. (2013–14) बाल मनोविज्ञान : बाल विकास (मानव विकास), आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन, संस्करण–प्रथम, पृ. 214–218